Relation of Religion to Theology.
धर्म और धर्मशास्त्र (ईश्वर-मीमांसा) के बीच संबंध

धर्मशास्त्र → यह संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है— पवित्र कानून या उचित आचरण का विज्ञान, जो प्रत्येक दुविधापूर्ण स्थिति में मार्ग दिखाता है।

- यह प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का संग्रह या हिंदू विधि संहिता या शास्त्र है, जिसमें पारंपरिक अर्थ में धर्म, आचरण, नैतिक बातें तथा कानूनी कर्तव्य सम्मिलित होते हैं। यह एक आदर्श गृहस्थ के लिए धार्मिक नियमों का स्रोत तथा परिवार कानून के आधार के रूप में प्रचलित है।
- इनकी मान्यता है कि कर्तव्य, अधिकार से बड़ा है।
- यह धर्म का, उसके प्रभाव का एवं धार्मिक सत्य की प्रकृति का तर्कसंगत और व्यवस्थित अध्ययन करता है।
- यह मानव आचरण के लिए एक ढांचा प्रदान करने और नैतिक जीवन जीने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करने का प्रयास करता है, साथ ही साथ सिद्धांतों की व्याख्या करता है।
- धर्मशास्त्र का झुकाव किसी धर्म-विशेष से होता है, आमतौर पर धर्मशास्त्रियों की रुचि अपने धर्म की मान्यताओं को स्पष्ट करने और अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ स्थापित करने में होती है।
- धर्मशास्त्र के वृहद साहित्य को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है —
  - (a) सूत्र / जैसे - न्याय-सूत्र, ब्रह्म-सूत्र
  - (b) स्मृति / जैसे - मनु-स्मृति
  - (c) निबंध और वृत्ति / ex - मिताक्षरा

	Theology	Religion
1.	Originated from break word theos and logia which means God and study.	Originated from latin word "Re-Ligare" which means Re-bind or Re-connect.
2.	It is the study of the Higher power and the characteristics and traits of the God or gods involved.	It deals with the field of study of humans sensing the spiritual realm and building myths, legends, stories, taboos, superstitions, all doctrines and dogma with rituals and customs involved.
3.	What God has done for us and how we can be restored to a right relationship.	What we can do for God and to gain his approbation.
4.	God centered	Man centered
5.	It is the science of studying the religious rules, etc.	It is a construct with its own rules for worship, behaviours, morality, etc.
6.	It is looking at God or what he believes to be God	It is own actions and attitudes shaped by understanding of the God, Practices and rituals.
7.	It is concerned with what people believe	It refers to ones conduct how the behave.
8	more like a science	more like the practical application of the belief.
9.	Analyzes the truth	Attempts to live it.
10.	One can be a brilliant theologion without being spiritual	One can be spiritual without being much of a theologion.

Ras Bihari Sharma
Dept. of Philosophy
M.V. College, Buxar